सामी कीम सड्राइ, ग्यानी पंड्तु पाण खे,
इन्हीअ ममता मुठा केतिरा, तूं समुझी पाणु बचाइ,
आग्या मनी अगस्ति जियां, अविद्या सिंधु सुकाइ
झाती झरोके पाइ, त सन्मुखु ड्रिसीं सुपिरीं.

अविद्या और ममता भाव से सावधान रहने के लिए सामीजी मनुष्य को समझाते हुए कहते हैं, ''हे मनुष्य! तुम अपने आप को बड़ा ज्ञानी और पंडित मत कहलाओ। ज्ञान और पंडिताई के मोह-ममत्व और अहंकार ने कई लोगों को मुसीबत में डाल दिया है। इसलिए यह बात समझ कर तुम स्वयं को बचा ले। अभिमान से दूर रहो। तुम सतगुरू की आज्ञा का पालन कर अगस्त्य ऋषि की भाँति, अविद्या/अज्ञान रूपी समुद्र को सुखा डाले। उसके पश्चात् अपने मन में झाँक कर देखोंगे तो अपने सामने प्रियतम परमेश्वर दिखाई देंगे।''

इस जगत में दो प्रकार के मनुष्य दिखाई देते हैं- ज्ञानी और अज्ञानी। ज्ञानी मनुष्यों में आत्मा का विवेक रहता है और अज्ञानी मनुष्यों के जीवन में अपनी देह के संबंध में अविवेक रहता है अत: उन्हें मूर्ख माना जाता है। वे अहंकारी भी होते हैं। आत्मज्ञान न होने के कारण वे ईश्वर को भुला बैठते हैं। माया-मोह-ममता में फँसे हुए ऐसे मनुष्यों को अपनी देह का अभिमान भी होता है। उनकी बुद्धि भ्रष्ट हुई होती है। अविद्या के प्रभाव के कारण पढ़े लिखे लोग भी जब अपने आप को बड़ा मान कर चलते हैं, तो उनका समावेश अज्ञानी मनुष्यों में ही किया जा सकता है। क्योंकि केवल किताबें रटने से या पोथियों का पठन करने से कोई बड़ा पंडित अथवा ज्ञानी-ध्यानी पंडित नहीं बन जाता। संत कबीर के शब्दों में,

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोइ ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ ।।

व्यावहारिक जगत में दिखाई देने वाले मात्र पोथियाँ पढ़कर पोंगा पंडित बने हुए पुरुष रजोगुणी एवं तमोगुणी होते हैं। अनेक विकारों से ग्रस्त ऐसे अज्ञानियों को सामी साहब ने समझाने का प्रयत्न किया है और उन्हें प्रभु के दर्शन कर सकने का मार्ग भी बताया है, जिस पर चलकर वे अपना जीवन सुधार सकते हैं। यह मार्ग है मोह-ममत्व से दूर रह कर, अविद्या का नाश करना और अपने अंत:करण में झाँक कर परमात्मा के दर्शन करने के लिए सक्षम/समर्थ बनना!

■